

काव्यखंड

पुतली में संसार

दुनिया शब्दों के अलावा
 और कहाँ बच पाती है आखिरकार
 -अशोक वाजपेयी

गुरु नानक



गुरु नानक का जन्म 1469 ई० में तलबंडी ग्राम, जिला लाहौर में हुआ था। इनका जन्म-स्थान 'नानकाना साहब' कहलाता है जो अब पाकिस्तान में है। इनके पिता का नाम कालूचंद खत्री, माँ का नाम तुप्ता और पत्नी का नाम सुलक्षणी था। इनके पिता ने इन्हें व्यवसाय में लगाने का बहुत उद्यम किया, किन्तु इनका मन भक्ति की ओर अधिकाधिक झुकता गया। इन्होंने हिन्दू-मुसलमान दोनों की समान धार्मिक उपासना पर बल दिया।

वर्णाश्रम व्यवस्था और कर्मकांड का विरोध करके निर्गुण ब्रह्म की भक्ति का प्रचार किया। गुरुनानक ने व्यापक देशाटन किया और मक्का-मदीना तक की यात्रा की। मुगल सम्राट बाबर से भी इनकी भेंट हुई थी। गुरु नानक ने 'सिख धर्म' का प्रवर्तन किया। गुरुनानक ने पंजाबी के साथ हिंदी में भी कविताएँ कीं। इनकी हिंदी में ब्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों का मेल है। इनके भक्ति और विनय के पद बहुत मार्मिक हैं। इनके दोहों में जीवन के अनुभव उसी प्रकार गुंथे हैं जैसे कबीर की रचनाओं में, लेकिन इन्होंने उलटबाँसी शैली नहीं अपनाई। इनके उपदेशों के अंतर्गत गुरु की महत्ता, संसार की क्षणभंगुरता, ब्रह्म की सर्वशक्तिमत्ता, नाम जप की महिमा, ईश्वर की सर्वव्यापकता आदि बातें मिलती हैं। इनकी रचनाओं का संग्रह सिखों के पाँचवें गुरु अर्जुनदेव ने सन् 1604 ई० में किया जो 'गुरु ग्रंथ साहिब' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गुरु नानक की रचनाएँ हैं - 'जपुजी', 'आसादीवार', 'रहिरास' और सोहिला। कहते हैं कि सन् 1539 में इन्होंने 'वाह गुरु' कहते हुए अपने प्राण त्याग दिए।

निर्गुण निराकार ईश्वर के उपासक गुरुनानक हिंदी की निर्गुण भक्तिधारा के एक प्रमुख कवि हैं। पंजाबी मिश्रित ब्रजभाषा में रचित इनके पद सरल सच्चे हृदय की भक्तिभावना में डूबे उद्गार हैं। इन पदों में कबीर की तरह प्रखर सामाजिक विद्रोह-भावना भले ही न दिखाई पड़ती हो, किन्तु धर्म-उपासना के कर्मकांडमूलक सांप्रदायिक स्वरूप की आलोचना तथा सामाजिक भेदभाव के स्थान पर प्रेम के आधार पर सहज सद्भाव की प्रतिष्ठा दिखलाई पड़ती है। नानक के पद वास्तव में प्रेम एवं भक्ति के प्रभावशाली मधुर गीत हैं। यहाँ नानक के ऐसे दो महत्त्वपूर्ण पद प्रस्तुत हैं। प्रथम पद बाहरी वेश-भूषा, पूजा-पाठ और कर्मकांड के स्थान पर सरल सच्चे हृदय से राम-नाम के कीर्तन पर बल देता है, क्योंकि नाम-कीर्तन ही सच्ची स्थायी शांति देकर व्यक्ति को इस दुखमय जीवन के पार पहुँचा पाता है। द्वितीय पद में सुख-दुख में एक समान उदासीन रहते हुए मानसिक दुर्गुणों से ऊपर उठकर अंतःकरण की निर्मलता हासिल करने पर जोर दिया गया है। संत कवि गुरु की कृपा प्राप्त कर इस पद में गोविंद से एकाकार होने की प्रेरणा देता है।

राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा

राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा ।
 बिखु खावै बिखु बोलै बिनु नावै निहफलु मटि भ्रमना ॥
 पुसतक पाठ व्याकरण बखाणै संधिआ करम निकाल करै ।
 बिनु गुरसबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु अरुझि मरै ॥
 डंड कमंडल सिखा सूत धोती तीरथ गवनु अति भ्रमनु करै ।
 रामनाम बिनु साँति न आवै जपि हरि हरि नाम सु पारि परै ॥
 जटा मुकुट तन भसम लगाई वसन छोड़ि तन नगन भया ।
 जेते जीअ जंत जल थल महीअल जत्र तत्र तू सरब जीआ ॥
 गुरु परसादि राखिले जन कोठ हरिरस नानक झोलि पीआ ।

जो नर दुख में दुख नहिं मानै

जो नर दुख में दुख नहिं मानै ।
 सुख सनेह अरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जानै ॥
 नहिं निंदा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना ।
 हरष सोक तें रहै नियारो, नाहि मान अपमाना ॥
 आसा मनसा सकल त्यागि कै जग तें रहै निरासा ।
 काम क्रोध जेहि परसे नाहिन तेहिं घट ब्रह्म निवासा ॥
 गुरु किरपा जेहि नर पै कीन्हीं तिन्ह यह जुगति पिछानी ।
 नानक लीन भयो गोबिंद सो ज्यों पानी सँग पानी ॥

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि किसके बिना जगत् में यह जन्म व्यर्थ मानता है ?
2. वाणी कब विष के समान हो जाती है ?
3. नाम-कीर्तन के आगे कवि किन कर्मों की व्यर्थता सिद्ध करता है ?
4. प्रथम पद के आधार पर बताएँ कि कवि ने अपने युग में धर्म-साधना के कैसे-कैसे रूप देखे हैं ?
5. हरिरस से कवि का अधिप्राय क्या है ?
6. कवि की दृष्टि में ब्रह्म का निवास कहाँ है ?
7. गुरु की कृपा से किस युक्ति की पहचान हो पाती है ?
8. **व्याख्या करें :**
 - (क) राम नाम बिनु अरुझि मरै ।
 - (ख) कंचन माटी जानै ।
 - (ग) हरष सोक तैं रहै नियारो, नाहि मान अपमाना ।
 - (घ) नानक लीन भयो गोविंद सो, ज्यों पानी संग पानी ।
9. आधुनिक जीवन में उपासना के प्रचलित रूपों को देखते हुए नानक के इन पदों की क्या प्रासंगिकता है ? अपने शब्दों में विचार करें ।

कविता के आस-पास

1. गुरुनानक के इन पदों से मिलते-जुलते कबीर के दो पद एकत्र करें ।
2. नाम महिमा का बखान करने वाले सगुण भक्त कवियों के कुछ वचन एकत्र कर विचार करें कि दोनों के भावों में कहाँ तक समानता है ?
3. मध्ययुग के निर्गुण संत कवियों की काल-निर्देश करते हुए एक क्रमवार सूची तैयार करें ।
4. 'गोधूलि भाग-1' में पठित रैदास के पदों के साथ गुरुनानक के इन पदों की तुलना करते हुए एक टिप्पणी लिखें ।

भाषा की बात

1. पद में प्रयुक्त निम्नांकित शब्दों के मानक आधुनिक रूप लिखें -

बिरथे, बिखु, निहफलु, मटि, सींधआ, करम, गुरसबद, तीरथभगवनु, महीअल, सरब, माटी, अस्तुति, नियारो, जुगति, पिछानी

2. दोनों पदों में प्रयुक्त सर्वनामों को चिह्नित करें और उनके भेद बताएँ ।

3. निम्नलिखित शब्दों के वाक्य-प्रयोग करते हुए लिंग-निर्णय करें -
जग, मुक्ति, धोती, जल, भस्म, कंचन, जुगति, स्तुति
4. निम्नलिखित विशेषणों का स्वतंत्र वाक्य प्रयोग करें -
व्यर्थ, निष्फल, नग्न, सर्व, न्यारा, सकल

शब्द निधि

बिरथे	: व्यर्थ ही
जगि	: संसार में
बिगु	: विष
नावे	: नाम
निहफलु	: निष्फल
मटि	: मति, बुद्धि
संधिआ	: संध्या, संध्याकालीन उपासना
गुरसब्द	: गुरु का उपदेश
अरुझि	: उलझकर
डंड	: दंड (साधु लोग जिसे वैराग्य के चिह्न के रूप में धारण करते हैं)
सिखा	: चोटी
सूत	: जनेऊ
जीअ	: जीव
जंत	: जंतु, प्राणी
महीअल	: महीतल, धरती पर
कंचन	: सोना
अस्तुति	: स्तुति, प्रार्थना
निघारो	: न्यारा, अलग, पृथक
परसे	: स्पर्श
घट	: घड़ा (प्रतीकार्थ - देह, शरीर)
जुगति	: युक्ति, उपाय
पिछानी	: पहचानी

